सम्वाद भाव अथवा षड्ज-मध्यम-
- षड्ज पंचम भाव :-

हिन्दुस्तानी संगीत में इन दो सम्वाद भावों को मान्यता दी गई है। क्रियात्मक गायन-वादन में सा-सां और सा-ग भावों को प्रमुखता दी जाती है। कुछ वादक सितार के एक तार को ग से मिलाते हैं। अच्छे तानपुरे के मन्द्र षड्ज को स्वयंभू स्वर गंधार बहुत स्पष्ट सुनाई पड़ता है, जो शुद्ध गंधार के रागों को अधिक सरस बनाने में अपना सहयोग प्रदान करता है। षड्ज-मध्यम (सा-म) भाव में 9 श्रुतियों का और षड्ज-पंचम (सा-प) भाव में 13 श्रुतियों का अंतर होता है। आजकल 1 पर सा, 10 पर म और 13वीं श्रुति पर प माना जाता है। प्राचीन और मध्यकाल में 4थी पर सा, 13वीं पर म और 17वीं श्रुति पर पंचम स्थापित किया गया था। दोनों कालों में स्वरों का स्थान बदलने के बावजूद सा-म और सा-प स्वरों के बीच की दूरी अपरिवर्तित रही, क्योंकि इन स्वरों में सम्वाद भाव बना रहना हिन्दुस्तानी संगीत में बड़ा आवश्यक माना गया है। गुणान्तर की दृष्टि से षड्ज-मध्यम सम्वाद में 4/3 और षड्ज-पंचम सम्वाद में 3/2 गुणान्तर होता है

Scanned with CamScanner

क्योंकि षड्ज की आंदोलन संख्या 240, मध्यम की 320 और पंचम की 360 होती है। सा-म अर्थात- 240-320 का गुणान्तर 4/3 और सा-प अर्थात 240:360 का गुणांतर 3/2 आयेगा। बता दें कि राग का मुख्य नियम यह है कि उसके वादी-संवादी स्वरों में सम्वाद भाव अवश्य होना चाहिये। प्रचलित रागों में केवल राग श्री और मारवा रागों के वादी-संवादी में सम्वाद भाव नहीं है, जिन्हें राग-नियम का अपवाद माना गया है।

Scanned with CamScanner